World Wide Journal of Multidisciplinary Research and Development

WWJMRD 2017; 3(4): 83-85
www.wwjmrd.com
*E-ISSN: 2454-6615*

**किरण देवल**
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

# चारण जाति देवी अवतार चरित्र में राजनीतिक दूरदर्शिता एवं महिलाशक्तिकरण : एक अध्ययन

## किरण देवल

**सारांश**
चारण जाति में देवी अवतार परम्परा रही है चारण जाति में अवतरित ये शक्तियों महामाया आदिशक्ति का ही अवतसार धारण का धरा धाम पर आई। इन्होंने जगत में व्याप्त अन्याय अत्याचार कुरीति बुराइयों का खण्डन कर सुराज की स्थापना की। इन देवियों ने राजनीतिक दूरदर्शिता का परिचय देते हुए क्षत्रियवंश के लोगों को अनेक भू–भागों का शासक बना आपस में संधियाँ कराई।
समाज के प्रत्येक वर्ग समान रूप से न्याय दिलाया सादगी पूर्ण जीवन जीते हुए इन देवियों ने अपने युग में इस प्रकार का अदम्य साहस दिखाकर अत्याचारियों के विरूद्ध स्वयं तलवार उठाई अन्याय का नाश एवं न्यायपूर्ण, राज्य की स्थापना की। अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं लेकर अन्य स्त्रियों को भी अपने वास्तविक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए आत्मसम्मान की रक्षार्थ प्राण हरने एवं प्राणोत्सर्ग करने की चेतना जाग्रत कर महिलासशक्तिकरण की ज्योति जलाई।

**संकेताक्षर:** अत्याचार, अदम्य, दूरदर्शिता, खण्डन, कुरीति, इष्टदेवी, निषेध, यशोगाथा, उज्ज्वल, सुशासन, प्राणोत्सर्ग

**प्रस्तावना**
चारण को देवीपुत्र और सरस्वतीपुत्र की संज्ञा से विभूषित किया जाता है क्योंकि यह जाति माँ भगवती की परमउपासक रही है। स्वयं भगवती समय–समय पर इस जाति में पूर्णावतार एवं अंशावतार के रूप में साक्षात् प्रकट होती रही है। देवी ने विभिन्न रूपों में इस जाति में अवतरित होकर समूचे मानव समाज का कल्याण किया है। देवियां आज भी समाज में अत्यन्त पूजनीय एवं जनश्रद्धा की पात्र है। इन शक्ति स्वरूप चारण देवियों ने अपने जनश्रद्धा की पात्र है। इन शक्ति स्वरूपा चारण देवियों ने अपने समय में आततायियों का कड़ा प्रतिरोध करते हुए अन्याय एवं अत्याचार से सीधी टक्कर ली थी और अपने तपोबल से आततायी शक्तियों का दमन कर सुव्यवस्था स्थापित कर समय की धारा बदल दी थी।
चारण जाति में अवतरित ये शक्तियाँ महामाया आदिशक्ति का ही अवतार धारण कर घटा पर आई और जगत् में व्याप्त अन्याय अत्याचार कुरीति–बुराईयों का खण्डन कर सुराज की स्थापना की।

**ठा. नाहर सिंहजसोल**
"समय–समय पर इस कुल में अनेक देवियों ने अवतार लिया दुष्टों का संहार किया एवं विशेष बात में कहना चाहूंगा कि इन देवियों ने अनेक क्षत्रिय वंश के लोगों को अनेक भू–भागों के शासक बना कर उन्हें आशीर्वाद दिया। इन देवियों ने कभी भी अपने कुल के किसी भी व्यक्ति को शासक नहीं बनाया। यह एक बड़ी और बहुत ही अनोखी बात है।"
भगवती आवड जी ने अन्यायी सुमरा शासन को समाप्त कर तनोट और देरावर जैसे भाटी राज्यों की स्थापना की। करणी जी ने लुटेरे ग्रसिया राज्यों की समाप्ति कर जोधपुर और बीकानेर जैसे विशाल रजवाड़ों की स्थापना की। भगवती बिरवड़ी जी (अन्नपूर्णा जी) ने सम्राट अल्लाउदीन खिलजी के अत्याचारी शासन के विरूद्ध राणा हम्मीर की सहायता प्रदान कर चित्तौड़ जैसे गौरवशाली राज्य का अधिपति बनाया। कामेही जी ने अजमेर (गोड़ावाटी) राज्य स्थापित करने में गौड़ राजपूतों को सहायता प्रदान की। अनेक क्षत्रियों को सुशासन का पाठ पढ़कर इन देवियों ने उनको राज्य प्राप्ति हेतु देविक तथा भौतिक सहायता प्रदान की, जिससे वे सफलता प्राप्त कर सके। उन सभी राज्यों के शासकों ने अपनी कुलदेवी, इष्टदेवी इन शक्तियों को माना।

**Correspondence:**
**किरण देवल**
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

राज्य प्रदान करने वाली (किंगमेकर) होते हुए भी इन देवी शक्तियों का व्यक्तिगत जीवन अत्यन्त सादगीपूर्ण त्यागी और वैरागी रहा। उन्होंने नवीन सम्प्रदाय चलाने या अपनी यशोगाथा गंवाने का कभी विचार ही नहीं किया। इन्होंने सनातन धर्म को ही आगे बढ़ाने और अपनाते हुए प्रत्येक निवास जीवन पर्यन्त तेमडाराय की गहन गुफा में रखा वहीं निवास कर निरंतर साधनारत रहे। भगवती श्री करणी जी महाराज ने अनगढ़ पत्थरों पर जाल की लकड़ियों का छाजन देकर कुटिया बनाई। जिसमें जीवन पर्यन्त आराधनालीन रहे। बिरवाड़ी देवी ने अपने मन्दिर में किसी भी प्रकार के चढ़ावे का निषेध किया। यद्यपि इन देवियों के भक्त राजा, महाराजा सेठ आदि थे परन्तु कभी कोई बहुमूल्य वस्तु कभी नहीं लेते।

''तू दीघांणु देव नर हूँ लीघाणों नथी
देतो देने ही देने वाली देवियाँ थी लेने वाली नही।

इन शक्तियों का चरित्र सूर्य की भांति उज्जवल और गंगा की भांति निर्मल रहा है, अपने अवतारकाल के इन देवियों ने अन्याय का नाश और न्यायपूर्ण राज की स्थापना के साथ–साथ दुखियों के संकट हरे, परस्पर वैर–विरोधकी अग्नि बुझाई, सोख्य स्थापित कराने हेतु आपस में वैवाहिक संबंध कराए न्याय किया एवं सन्मार्ग पर चलने की सीख दी।

## आवड़ देवी के जीवन चरित्र में राजनीतिक दुरदर्शिता एवं महिलासशक्तिकरण

विक्रम संवत् 808 में महाशक्ति हिंगलाज माता के पूर्ण अवतसार के रूप में बाड़मेर जिले की धोरीमन्ना तहसील चालकना गांव में मामडियाजी के घर हुआ, आवड़ जी सहित ये सातबहनें थी। आवड़ जी के अवतरण काल में समसामयिक परिस्थिति विकट अराजक, अभावग्रस्त, अकालग्रस्त एवं त्रासदीपूर्ण अत्यन्त थी। जिसकी लाठी उसकी भैस ही मूलमंत्र था। कोई सुव्यवस्थिज्ञत साम्राज्य नहीं था। समाज में राजनीतिक आर्थिक न्यायिक व्यवस्था एवं नैतिक मूल्यों का तानाबाना छिन्न–भिन्न हो गया था। दुष्टों और आततातईयों का चहुँ और बोलबाला था लोग अपने नरकीय जीवन से त्रस्त हो गये थे। आवड़ जी महाराज का अवतरण दुख की ज्वाला में जलती हुई मानव जाति हेतु अमृत वर्षा सदृश्य था। उन्होंने तत्कालीन समाज की धारा को ही परिवर्तित कर दिया। पश्चिमी राजस्थान एवं सिंध प्रदेश को दुष्टों के भार से मुक्ति कर मानवता का परित्रांण किया था।

सिन्ध के दुष्ट शासक ऊमर सुमरा का समूलनाश कर वहां का राज्य सम्मा क्षत्रियों को प्रदान करके सुव्यवस्था स्थापित की। संपूर्ण माढ़ क्षेत्र में यदुवंशी भाटियों के राज्य की स्थापना आवड जी महाराज की कृपा का ही फल रहा। आवड जी महाराज के प्रभाव से रतनो जी चारण के प्रयास से गुजरात स्थित यदुवंशी रियासत की सैनिक सहायता से देवराज भाटी ने अपनी खोई हुई रियासत एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की। आवड जी महाराज की राजनीतिक दूरदर्शिता की कारण ही समूचे भू–भाग में भारी शासकों का आधिपत्य स्थापित हुआ और जैसलमेर जैसी सुदृढ़ रियासत की स्थापना हुई।

## श्री करणी जी महाराज के जीवन में राजनीतिक दूरदर्शिता एवं महिला सशक्तिकरण

पन्द्रहवीं शताब्दी में भारत वर्ष में कोई सुव्यवस्थित साम्राज्य नहीं था। छोटी–छोटी रियासतों एवं ग्रासिया जागीरों में सत्ता विभक्त थी। अराजकता एवं अव्यवस्था का वातावरण था। उत्तरी पश्चिमी राजस्थान की भी यहीं स्थिति थी, ऐसे संक्रमण काल में महाशक्ति के पूर्णावतार के रूप में श्री भगवती करणी जी महाराज का प्राकरय वर्तमान जोधपुर जिले की फलोदी तहसील के सुवाप में महावीर किनिया का घर हुआ।

करणी जी ने रावरिड मल का राज्यतिलक किया। रावरिडमल चूडाँ जी राठौड़ के पुत्र थे राव रिडमल को करणी जी ने जांगलू देश का शासक बनाया। श्री करणी जी महाराज ने राव रिडमल के पौत्र राव बीका को सुराज की स्थापना का आशीर्वाद देकर माँ करणी के मार्गदर्शन में राव बीका ने बीकानेर नगर एवं रियासत की स्थापना की।

राव बीका के राज्य की स्थापना इस क्षेत्र के भाटियों को बहुत अखरी और वे लम्बे समय तक राव बीका से संघर्ष करते रहे। तत्पश्चात् श्री करणी माँ ने विशेष प्रयत्न कर परस्पर वैमनस्य मिटाने के लिए पूगल के भाटी राव शेखा की पुत्री रंग व कुंवरी का विवाह राव बीका से करवा दिया, तत्पश्चात् भी संघर्ष नहीं रूका, तब दोनों पक्षों में सीमा विवाद समाधान हेतु भगवती ने निर्णय दिया कि जिस स्थान पर मैं अपने परमधाम को महाप्रयाण करूंगी वहीं तुम्हारी परस्पर सीमा होगी, विवाद ने शांति धारण की वस्तुतः बीकानेर और जोधपुर जैसी सुदृढ़, रियासतें की अधिष्ठात्री देवी श्री करणी जी महाराज थी।

भगवती श्री करणी जी की राजनीतिक दुरदर्शिता से नवकूंटी मारवाड़ में राठौड़ राज्यवंश का साम्राज्य स्थापित हो पाया था। राठौड़ों की आराध्यदेवी करणी जी है। करणी जी महाराज देशनोक में चूनेगारे के पाल की लकड़ी की छत से निर्मित निज मंदिर उनकी तपोस्थली है यहीं से राव जोधा से निर्मित निजमंदिर उनकी तपोस्थली है यहीं से राव जोधा राव बीका और राव शेखा को प्रजापालन का निर्देश देती। यही विराज कर गौरक्षारक्षार्थ पर दिये गये। बलिदन पद अपने दलित चरवाहे दशरथ मेघवाल का अपने मंदिर में स्मारक बनवाकर उनकी पूजा का विधानस्थापित करती एवं सामाजिक समानता का संदेश दिया। माँ ने जीवदया, करूणा प्रेम, सामाजिक समानता, गोपालन पर्यावरण रक्षण, राजनीतिक दूरदर्शिता एवं महिला सशक्तिकरण का संदेश दिया।

## राजबाई के जीवन चरित्र में राजनीतिक दुरदर्शिता एवं महिला शक्ति

राजबाई अथवा राजलबाई का अवतरण कच्छ गुजरात में चिडियाला गांव के काछेला चारण ऊदाजी (उदयरावजी) के घर दुआ। इस देवी की मान्यता गुजरात तथा राजस्थान दोनो प्रदेशों में समान रूप से है। राजबाई मां इसलिए भी अत्यधिक प्रसिद्ध है क्योंकि इस देवी के साथ इतिहास का एक विलुप्त अध्याय जडा हुआ है। इस समस्त घटनाक्रम का विशद् विश्लेषण विद्वान ''लेकख श्री औंकार सिंह जी लखावत ने अपनी पुस्तक 'राजलनव शेजा दिया छुडाया'' में सप्रमाण किया है।'' बीकानेर महाराजा रायसिंह के अनुज पृथ्वीराज राठौड ददरेवा के जागीददार थे। वे अत्यन्त वृबृह गुण ग्रहक डिंगल के उद्भट कवि तथा भक्ति प्रकृति के वाकपटु व्यक्ति थे उनके द्वारा रचित डिंगल काव्यकृति ''बेलि कसन रूकमणी री'' साहित्यिक क्षेत्र में पांचवा वेद माना जाता है। उनकी उपस्थिति मात्र से कोई भी सभा सुशोभित हो उठती थी। वही पृथ्वीराज राठौड मुगल बादशाह अकबर के सम्मुख सभासद थे। वे शक्ति अवतार राजबाई के अन्नत भक्त थे। राजबाई उन्ही की प्रार्थना पर मुगलकालीन कुप्रथा ''नोरोजा'' का अपने तपोबल से निवारण किया था। जब मुगलकालीन विलासितापूर्ण जीवन पद्धिति में सत्रियों को मात्र भोग्या समझा जाने लगा था। जो भारतीय सनातन जीवन मूल्यों के नितान्त विपरीत था। अपहरण बहुविवाह, प्रर्दा प्रथा जैसे अनेक दोष उत्पन्न हो गये थे। नौरोजा की कुप्रथा भी इसी श्रृखला में एक दुखदायी कडी थी। जिसके कारण स्त्रीवर्ग स्वाभीमानी सामन्त तथा आम जनता त्रस्त थी। भक्त हृदय पृथ्वीराज राठौड ने इस अपमान जनक स्थिति से छुटकारा प्रदान करने के लिए राजबाई, से अभ्प्रर्थना की पृथ्वीराज राठौड का एक डिंगनल गीत अत्यन्त प्रसिद्ध है –

''आई आवजे न्यू वर्ग बाहर आवीजे'

मानदान जी कविया दोपपुरा ने लिखा –

''छत्रीयां सू लाग छूटी मिट्यों किलमां मांण

चारण वृत्त घेजा चाढी भलां कुलरा भांग

चारण शक्ति राजबाई ने अपने समय में राजनीतिक दुदर्शिता एवं महिलाशक्तिकरण का अद्‌भुत परिच्य दिया। इस के लिए कृतज्ञता एवं श्रद्धा व्यक्त की उतनी ही जाये कम है।

## निष्कर्ष

चारण जाति में अवतरित ये देवियां आज भी मात्र चारण जाति ही नहीं अपितु समूचे मानव समाज में श्रद्धासन पर विराजमान है। इन देवियों ने शील स्वधर्म पवित्रता को रक्षार्थ तथा समाज में व्याप्त अराजकता के विरूद्ध एवं मृत्यु के समक्ष दृडता से डटकर कठोर अनुष्ठान तथा बडे से बडे राज्यों शक्तिशाली समूहों रूढियों और अन्याय के प्रत्येक प्रसंग के विरूद्ध निर्भय होकर संघर्ष किया है। संस्कृति की रक्षार्थ एवं अराजकता से सुव्यवस्था स्थापित करने में चारण शक्तियों का अविस्मरणीय योगदान रहा है। इस देवियों ने चारण जाति में अवतार ले इस जाति की धन्य–धन्य एवं गौरान्वित कर दिया। इनके जीवन में राजनीतिक दूरदर्शिता एवं प्रासंगिकता महिला सशक्तिकरण के उदाहरण देखने को मिलते है।

नवलाख लौवडिया चौरासी चारणी एवं सुहासनों से कोई भी अनभिज्ञ नही है। इसलिए चारण जाति में सभी स्त्री शक्ति स्वरूपा समझी जाती है। वर्तमान में इनके जीवन मूल्यों को आत्मसात कर स्वयं को शक्ति स्वरूपा समझा जाता है। करूणामयी ममता भी दर्शार्ती है। तो नवचण्डी बन बुराईयों का नाश करने में भी सक्षम है स्त्री।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. कश्यप, सुषमा, (2020), हिन्दी महाकाव्यों में राजनीतिक चेतना
2. मोदी, लीला, (2018) भंवर सिंह सामौर (चारण) के गद्य साहित्य का अनुशीलन
3. पालावत, कविता, (2016), चारणों की उत्पति व सामाजिक स्थिति श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका।
4. पंवार, रणजीतसिंह, (अक्टूबर 2014), राजस्थान का बहुआयामी चारण साहित्य : एक विवेचना, शोधश्री, पृ.सं. 11–16
5. साधना राजलक्ष्मी (2012) चारण कुलप्रकाश, द्वितीय वृति–संपादक 102 पंचरत्न कॉम्प्लेक्स, उदयपुर
6. जिज्ञासु, मोहन लाल, (1976), चारण साहित्या का इतिहास भाग–2, जैन प्रकाशक
7. कोठारी रजनी (1973), 'कास्ट इन इण्डियन पॉलिटिक्स पुरोहित देव नाथ', पुरोहित देवनाथ का हस्तलिखित ग्रंथ।
8. जिज्ञासु, मोहनलाल, (1677), चारण साहित्य का इतिहास, भाग–1, जैन प्रकाशक, रतनाड़ा, जोधपुर।
9. जिज्ञासु, मोहन लाल, चारण साहित्य का इतिहास, भाग–1, पृ. 74
10. दान, मुरारी, 'संक्षिप्त चारण इत्यादि, पृ.सं. 55
11. दान, गिरधर, रत्नु, चारणों की विशेष वेशभूषा व हथियार, चारण साहित्य परंपरा, पृ.स 242
12. वाजपेयी, अशोक, अशोक वाजपेयी कविता : राजनीतिक चेतना, चतुर्थ प्रकरण, पृ. 155–158